इति भाषाटीकासह सत्यनारायणकथास०

सदा सुषी रहेंगे प्रभु भक्तनके सबहै सब घट बासी हैं प्रत्यक्षहैं सत्यनारायणकी पूजाकोई करौ स्त्रीवा पूरुष सबको श्रेष्ठहै सबकामना सिद्ध होयगी ओरजो कथा सुनेंगे तिनकी विष्णुरक्षा करेंगे और विष्णुको अत्यंत प्यारे होयंगे और सबदेवता नके देवता श्रीसत्यनारायण की कृपासैंसब

कृत्वाकामानवाप्नोतिविधिनाचिंतनान्मुदा ॥ इतिहासमिमंभक्तयाशृणुयाद्वापियोनरः ॥ सोपिविष्णुप्रियतरःकामसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ ५७ ॥ ॥ इतिश्रीइतिहाससमुच्चयेश्रीसत्यनारायणाख्यानेसाधुगृहप्रवेशोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

वस्तू सुगम रहेंगी और या कृत्यके बराबर और कोई ऐसा यतन नहीं है कि जा यतनके करनेसे मनुष्यकी शीघ्रही गति होय या सत्यनारायण प्रत्यक्षफलदेंगे ॥ ५७ ॥ इतिश्री इतिहास समुच्चये सत्यनारायणकथाभाषटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीसत्यनारायणार्पणमस्तु ॥ ॥ ५ ॥

यह पुस्तक मुंबईमें बापू हरशेट देवळेकर इनोंने आपके छा० छा०
संवत १९३८.

हे सत्यनारायण तुमको नमस्कार करतहूं कैसेहो तुम मेरी कामना पूरण करी और मो अपरा-
धीको मोक्षदीनी तुमनें ॥ ५२ ॥ कैसेहो तुम सुरदेता असुरराक्षस मनुष्य नाग सब तुह्मारेहीमैं
प्राप्तहैं तुम सबके ऊपर कृपा करोहो मैं अपराधी हौं सो मेरो अपराध क्षमा कियो ॥ ५३ ॥ ऐसें
स्तुति कर पृथ्वी मैं गिरत भयो प्रेममैं मगन होयकैं आंसुडारत भयो ॥ ५४॥ और बहुत प्रसन्न

॥ ॥ साधुरुवाच ॥ ॥ प्रणमामिसत्यसंधंसत्यनारायणंपरं ॥ ममापराधि
नोमौढ्यंक्षमस्वत्वंकृपानिधे॥ ५२ ॥ सुरासुरनरानागादुराचाराःकृपाबलाः
॥ सर्वेत्वदंगसंभूताअपराधन्क्षमस्वमे ॥ ५३ ॥ इतिस्तुत्वाजगन्नाथंदंडव
त्पतितोभुवि ॥ प्रेमाश्रुपूर्णोविमलोत्हृष्टोत्हृष्टतनूरुहः ॥ ५४ ॥ ब्राह्मणा
न्भोजयित्वाथस्वजात्यामात्यबांधवैः ॥ प्रसादंसगणोभुक्त्वाधनपुत्रादि
भिर्युतः ॥ ५५ ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वामृतोविष्णुपदंययौ ॥ विधिनातेन
योभक्त्यासत्यनरायणार्चनम् ॥ ५६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

होकर ब्राह्मणनको बुलाय भोजन करावत भयो और अपने जो मित्र भाई बंधु कुटुंब गण स
हित प्रसाद पायो ताके प्रभावतैं याके धन पुत्र होतभयो॥ ५ ५॥ जोयारितिसै सत्यनाराणकीपूजा
करेंगे सोयालोकमैं सुख भोग करेंगे जब मृत्युहोयगैतबमृत्यु लोकसे विष्णुलोकमैंजायंगे ॥ ५ ६॥

तब साधु हर्ष करि पूजाकी सामग्री लावत भयो सबको बुलायकरि ब्राह्मणसों पूजा कराई॥ ४७॥
पहले संकल्प करिके जो धनकी सामग्री लाय प्रकारके तोरन बनाय चंदोवा बनावत भयो॥
॥ ४८॥ ब्राह्मणकोबुलाय साधु प्रकारके जो फल फूल धूप दीप नैवेद्य सहित सत्यनारायणको

आनयामासविप्राग्र्यानमात्यान्मित्रबांधवान् ॥ पूर्वस्थापितमुद्राभिर्ना
नालंकारतोरणैः ॥ ४७ ॥ बहुवर्णवितानैश्चमुक्ताजालैश्चराजितं ॥ मंडपं
कारयामासमणिस्तंभविराजितं ॥ ४८॥ विप्रैश्चसहितःसाधुःसत्यदेवंप्रपू
जयत्॥ नानाद्रव्योपहारैश्चधूपैर्दीपैर्मनोरमैः ॥ ४९ ॥ भक्ष्यभोज्यैश्चमिष्टा
न्नैफलैर्नानाविधैःशुभैः ॥मणिमुक्तास्वर्णपुष्पैःपद्मचंपकजातिभिः ॥५०॥
पूजयित्वाविधानेनपरिक्रम्यकृपानिधिं ॥ स्तुवन्गद्गदयावाचाप्रणनाम
दायुतः ॥५१॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

पूजन करत भयो ॥ ४९ ॥ अच्छे सुंदर भोजनअनेकप्रकारके पदार्थ तय्यार करत भयो औ म
णिमोती सुवर्णको चंदोवा फलफूल अरु पद्मचं पाकेसे अतिसुंदर सब प्रकारकी पूजा करत भ
यो ॥ ५० ॥ या विधानसों पूजा करि परिक्रमा करि गदगद बाणीसो स्तुति करत भयो ॥५१॥

जैसे कलावती बहुत प्रकारसों दुःखको प्राप्तभई तैसेही लीलावति विलापकरत भई ॥ ४२ ॥ तब आकाश बाणी भई कि साधु तुह्मारी कलावति जो है सो भक्तिकरि सत्यनारायणको प्रसादले तो

कलावतीबहुविधंविललापातिदुःखिता ॥ तथालीलावतीतावत्साधुर प्यतिदुःखितः ॥ ४२ ॥ भक्त्याप्रसादंगृह्णातिपतिंप्राप्स्यतिमानवा ॥ इ त्याकाशवचःश्रुत्वाविस्मिताचचकारसा ॥ ४३ ॥ तावन्निमग्नानौरूर्ध्वंभ गवत्कृपयास्वयं ॥ समाययौसपतिकांतांदृष्ट्वामुदिताभवत् ॥ ४४ ॥ जा मातरंसामलिंग्यमुमुदेसगणोभृशं ॥ मृतःपुनरिहायातइतिलोकाविसि स्मिरे ॥ ४५ ॥ अथसाधुश्चसाल्हादोभक्त्यापरमयायुतः ॥ पूजासंभारमाह तुंलोकानाज्ञापयत्तदा ॥ ४६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

पतिमिले यह आकाशबाणी सुनिसाधु तैसेही करतभयो ॥ ४३ ॥ सत्यनारायणकी कृपातें वाही स मयनौकाजलसे उपर आवतभई ॥ ४४ ॥ जब नौका उभरि तब जमाईसे मिलके सबको वडाहर्षभयो ॥ ४५ ॥ तबतौ सबमनुष्य आश्चर्य करतेभये कि मरके कोईभीजीयो है यह कहत भये ॥ ४६ ॥

यहकहकै विलाप कर रही वाकेमुषको देषकैं ॥ ३६ ॥ और तैसेही कलावती पृथ्वीमैं गिरत भई जैसे केलावृक्षगिरे इस प्रकार गिरि ॥ ३७ ॥ कैसी है कलावति सुंदरहै रूपजाको बहुत चतुरमूंगे

कथमेतांदशांनीताधिगस्तुकरुणंतव ॥ विलप्यैवंसकरुणंसुताननमुदैक्षत ॥ ३६ ॥ तथाकलावतीभूमौपपाताकुलविग्रहा ॥ रंभेववातनिहताकांत कांतेतिवादिनी ॥ ३७ ॥ कलावतीचारुकलासुकौशलाप्रवालरक्तांघ्रितलातिकोमला ॥ सरोजनेत्रांबुकणान्विमुंचतीमुक्तावलीभिस्तनयुग्ममंचती ॥ ३८ ॥ हानाथप्रियधर्मज्ञकरुणाकरकौशल ॥ त्वयाविरहितापत्यानिराशाविधिनाकृता ॥ ३९ ॥ क्वयास्यामिक्वतिष्ठामिकिंकरोमिकुतःसुखं ॥ शरणंकिंकरोम्यद्यकोमेदुःखंविमोचयेत् ॥ ४० ॥ अर्द्धांगंपुरुषस्यस्त्रीवेदवादइतिश्रुतः ॥ पतिरर्द्धंगतंकस्मादर्धांग्याजीवनंभवेत् ॥ ४१ ॥ ॥ ६ ॥

कोसोरंग कमलसेनेत्र कोमल शरीर गले मोतियानकीमाला शोभायमान है ॥ ३८ ॥ हाय नाथ प्रिय हे धर्मज्ञ करुणाकर तुमते बिनमैं निरास करदई ॥ ३९ ॥ अबमें कहांजाउं कैसें सुषप्राप्त होय दुःखसौं कौन छुडवै ॥ ४० ॥ बेदमैं ऐसें सुनिकि स्त्रीअर्धांगी है पतिके जीवै ॥ ४१ ॥ ॥

लमैं बुड जातभई ॥ २८ ॥ फिरजो माताको बुडी भई देखकै वार विलाप करत भई कि हाय ई
श्वर तुमने काहा करी अति कठिनता भई अत्यंत विपत्ति दई तवसाधु कहत भयो देषो कैदमे र
हे तब बहुत प्रकारके दुख प्राप्तभये ऐसो दुखकभी नहीं भयो कहके वृक्षके समानगिरा ॥ २९॥ ३०॥

अवज्ञानात्प्रसादस्यनौकातद्वृत्तसंयुता ॥ निमग्नाजलमध्येथसाधौपश्य
तितत्क्षणात् ॥ २९ ॥ मग्नंजामातरंपश्यन्विललापमहाधनः ॥ हाहतोस्मी
तिकेनेदंकृतमेतद्विडंबनम् ॥ ३० ॥ कारागारेबहुविधंदुःखंभुक्तमनेनहि ॥
शल्यंवक्षस्यर्पयितुंहाहाकिंविधिनाकृतं ॥ ३१ ॥ जामास्ततताततातेतिवि
गतोसिमहामते ॥ संगतंमांकुरुष्वेतित्वंविनाजीवितेनकिं ॥ ३२ ॥ पुत्र
हीनोस्मिविधिनापुराबहुविडंबितः ॥ त्वयास्मिससुतोनष्टेत्वयिकिंजीवि
तेनमे ॥ ३३ ॥ अथलीलावतीतत्रगतामंगलसंयुता ॥ जामातुर्मरणंश्रु
त्वापपातभुविमूर्छिता ॥ ३४ ॥ सुतामालिंग्यविलपन्हाहतास्मीतिवा
दिनी ॥ अहोविधिस्त्वमज्ञोसित्यकृतार्थासुतात्वया ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥

हे प्रभु तुमकहांगये विन तुह्मारेकैसे जीवन होय ॥ ३१ ॥ पुत्रकरिकै हीनहूं विधना कैसी करी ज-
न्म कैसें पुरा करैं ॥ ३२ ॥ यापीछे लीलावती तहांगई मंगलवार करती सोजमाईकोमरन सुनकै मू-
र्छा खाकै गिरतभई ॥ ३३ ॥ कन्यातासों लिपटकै रुदन करत भई कैसी तुमारी नीतिहै ॥ ३४॥ ३५॥

तासों हम प्रसन्न भये ॥ २३ ॥ प्रसन्नहोयकै भगवान बोलत भये कितुमैं बरदिया तुमारी कामना सिद्ध होगी यहकह भगवान् अंतर्ध्यान हुए साधु अपने आश्रम को आवत भयो ॥ २४ ॥ अपने नगरके समीप आयकरकै दूतको भेजेदूत घरमें आयकै लीलावती से कहत भयो ॥ २५ ॥ कहा

स्तोष्यतेत्वत्कृतेनैतत्स्तोत्रेणभुविमानवः ॥ तुष्टोहंतस्यदास्यामिकामितानखिलान्वरान् ॥ २४ ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णुःसाधुश्चस्वाश्रमंगतः ॥ आगत्यनगराभ्याशेप्राहिणोद्दूतमग्रतः ॥ २५ ॥ गृहमागत्यदूतोसौप्राहलीलावतींप्रति ॥ जामात्रासहितःसाधुःकृतकृत्यःसमागतः ॥ २६ ॥ सत्यनारायणार्चायांस्थितासाध्वीसकन्यका ॥ तांसमाप्यमुदासाध्वीकृतकौतुकमंगला ॥ सखीगणैःपरिवृतानौकांतेसत्वरागता ॥ २७ ॥ कलावतीत्ववज्ञायप्रसादंसत्वरंययौ ॥ पातुंपतिमुखांभोजंचकोरीवदिनात्यये ॥ २८ ॥

कि जमाई सहित साधु आगए हैं तासमय लीलावती कन्या सहित चेतनभई और सत्यनाराए की पूजामैं हीं ॥ २६ ॥ तापूजाको समाप्ति करकै मंगलाचार करती भई ॥ २७ ॥ तब कलावती अपने प्रसादको अनादर करकै शीघ्रही जातभई पतिसन्मुख प्रसादकी अवज्ञा करिकै नौका ज

साहमनें अपनो शुभकर नहीं जानो ॥ १७ ॥ समुद्र जोहै दुषरूपी तामैं डूबे दुषमैं सुषदुर्लभहै अरु मूढ बुद्धि धन करके गर्क अंधाहो राहाहै ॥ १८ ॥ मैने अपनो शुभनजान्यो मूढ बुद्धिता करकै सो मेरो अपराध क्षमाकीजिये ॥ १९ ॥ हे नाथ अपने दासको आज्ञाकरो तातें तुह्मारे चरणको स्म-

त्वन्मायामोहितात्मानोनपश्यंत्यात्मनःशुभं ॥ दुःखांबुधौनिमज्जंतोदुःखे चसुखमानिनः ॥१८॥ मूढाहिधनगर्वेणमदांधोकृतलोचनाः ॥ नजानंत्यात्मनःक्षेमकथंपश्यामिमूढधीः ॥ १९ ॥ क्षमस्वममदौरात्म्यंतमोधाम्नोहरेविभो ॥ आज्ञापयस्वदास्यंमेयेनतेचरणस्मृतिः ॥ २० ॥ इतिस्तुत्वालक्षमुद्रामितंवस्तुचतत्पुरः ॥ निधायप्रतिजज्ञेससाधुर्भक्तिसमन्वितः ॥ २१ ॥ गत्वावासंपूजयिष्येसत्यनारायणंविभुम् ॥ तुष्टोनारायणःप्राहवांछाःपूर्णाभवंतुते ॥ २२ ॥ पूत्रपौत्रसमायुक्तोभुक्त्वाभोगाननुत्तमाम् ॥ मामर्चयसदाभक्त्यामत्सान्निध्यमुपैष्यसि ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

रण करों यहकह्योकि लक्षमुद्रा धेरेहैं सो जब घर पहुंचोंगो तब सत्यनारायणकी पूजा करूंगो ॥ २० ॥ २१ तव भगवान् प्रसन्न होयकै कहत भये तुह्मारी वांछासिद्धहोयगी पुत्रपौत्र संयुक्त अन धन करक ॥ २२ ॥ जो मेरी पूजामें सदा तत्परहैं वोमेरेही निकट आयनिवास करेंगे जो तुमनैं स्तुति करी

फिर तपस्वी बोलत भयो कृपाकरिके पहले किये जोकर्म सोकहतहूं कि चंद्रचूडराजाने पूजाकरि ॥१२॥ तबतुमनै कन्याके अर्थ वापुत्रकेअर्थ जो संकल्प कियोहो सत्यनारायणको पूजाको सो अ बतकभी नहीं करी ॥१३॥ सत्यनारायण विश्वव्यापी फलके देनहारेहैं तिनको अनादर करके जात

पुनःसतापसःप्राहकृपयापूर्वकर्मतत् ॥ चंद्रचूडोयदानर्चसत्यनारायणंनृ पः ॥ १२ ॥ अनपत्येनसुचिरंपुत्रकन्यार्थिनात्वया ॥ प्रार्थितंतत्सुसंपन्नंइ दानींस्मर्यतेनकिं ॥ १३ ॥ सत्यनारायणोदेवोविश्वव्यापीफलप्रदः ॥ तमना दृत्यदुर्बुद्धेकुतःशंभवितातव ॥ १४ ॥ तापसोक्तंवचःश्रुत्वासाधुःसस्मारवैपु रा ॥ कृतसंकल्पमथचयावत्पश्यत्यसौपुरः ॥ १५ ॥ सत्यनारायणंदेवंताप संतंददर्शसः ॥ प्रणम्यभुविकायेनपरिक्रम्यपुनःपुनः ॥ तुष्टावतापसंतत्र साधुर्गद्गदयागिरा ॥ १६ ॥ साधुरुवाच ॥ सत्यरूपंसत्यसंधंसत्यनारायणं हरिं ॥ यत्सत्यत्वेनजगतःसत्यत्वंत्वांनमाम्यहम् ॥ १७ ॥ भई ॥ १४ ॥ अब सुख

कहां तुमने पहले जो स्मरणकियो बरपायकै भूल जात भई हे सत्यनारायण स्वामी तिनकोरू प तपस्वी है अरुतब सुनि साधु नमस्कार करत भयो हे नाथ तुम सर्व घटघट बासीहो ॥ १५ ॥ तबतौ प्रसन्नहै करि गदगदवाणी करिस्तुति करिकें कहत भयो ॥ १६ ॥ हे भगवान् सत्यरूपहो सत्यके मिलापि हो तुह्मारे सत्य करिके तुमको नमस्कारहै तुह्मारी माया करिकेंसब मोहित हे

यहकारणकहाहैं मेरो धनकोहांगयो यहकहकै बिजलीके समान पृथ्वीमैं गिरत भयो ॥ ७ ॥ बोल्यो कहांमैं जाऊं कहाकरूं अबमेरोधन कहांमिलेयहकहकैमूर्छागतभयो बार२विलाप करतभयो औबो

धनमंतर्दधेसद्यस्तृणपत्रादिपूरिताः॥ भारस्यापगमादृष्ट्वातरणीरूर्ध्वगा स्तदा ॥ धनंनौकासुनास्तीतिसाधुश्चिंतापरोभवेत् ॥ ७ ॥ किमिदंकस्य वाहेतोर्धनंकुत्रगतंमम ॥ वज्रपाताहतोद्रव्यभृशदुःखितमानसः ॥ ८ ॥ कयास्यामिक्वतिष्ठामिकिंकरोमिधनंकुतः ॥ इतिमूर्च्छांगतःसाधुर्विलला पपुनःपुनः ॥ जामात्राबोधितश्चैवतापसंतंजगामह ॥ ९ ॥ साधुरुवाच ॥ कोभवानितिपप्रच्छदेवोगंधर्वईश्वरः ॥ देवदेवोथवाकोपिनजानेतवविक्रमं ॥ आज्ञापयमहाभागमद्विडंबनकारणं॥ १० ॥ तापसउवाच ॥ आत्मनोमित्र मात्मैवतथाशत्रुरपिस्वयम् ॥ त्यजमौढ्यमिदंसाधोप्रवादंमावृथाकृथाः ॥ इत्येवंज्ञापितोप्येवनबुबोधयदाधमः॥ ११ ॥

लतभयोकैतुमकौनहो देवताहो कैगंधर्वहो ईश्वरहो देवतानके देवताहो कोइ तुह्मारे पराक्रमकोनहीं जाने सोतुम मोसैं आज्ञा करो मेरे कौन अपराधहैं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ तब तपस्वी बोले अपनो मित्र आपहीहै अपनोशत्रु आपहीह मौनको छोड वृथाबादजो मैनेंकह्योहै अज्ञानतासै नहींजानो धनका गर्व करिकै ॥ ११ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

साधूगाजेवाजे मंगल करिके चलतभयो ॥ ११ ॥ इति इतिहास० साधुस्वदेशगमने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४
अब सूतजी सौनकादिक ऋषिनसौंकहते है स्वदेशताको साधुचले तबतकभी सत्यनारायणकी पूजा करीनहीं तब सत्यनारायणकोपरकतेभये ॥ १ ॥ सत्यनारायणकलीयुगविषै प्रत्यक्ष फलकेदेनहारे हैं ॥ २ ॥ सो वो तपस्वीको रूप धरिकै सत्यनारायण साधुसे कहत भये ॥ ३ ॥ अरे तेरी नौकामैं धनहै

सूतउवाच ॥ ॥ जामात्रासहितःसाधुर्धनलाभेनमुग्धधीः ॥ स्वदेशंचलितो थापिनकृतंहरिसेवनं ॥ १ ॥ सत्यनारायणोदेवःप्रत्यक्षफलदःस्त्रिया ॥ कन्ययापूजितस्तस्मैकृपयामुक्तिदोभवत् ॥ २ ॥ तंबुबोधयिषुःसाक्षात्सत्यनारायणःस्वयम् ॥ तापसंवेषमास्थायतमुवाचससंभ्रमः ॥ ३ ॥ ॥ तापसउवाच ॥ धनंकिंनौषुतेसाधोमामनादृत्ययासिकिं ॥ प्रत्युत्तरमदात्साधुःक्षिपन्नौकाश्वसत्वरम् ॥ ४ ॥ भोतापसधनंक्वास्तितृणपत्रादिपूरिताः ॥ गच्छंतिनौकाः स्वस्थानंकोवात्रानादरस्तव ॥ ५ ॥ इत्युक्तस्तापसःप्राहतथास्त्वितिवचस्ततः ॥ तत्समीपादपक्रम्यवृक्षखंडेन्यलीयत ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥

सो कुछ हमको देउ तब साधु बोल्यो मेरी नौकामैं धन नहीं केवल पत्ताहै ॥ ४ ॥ आपस्थानको जाओ विरोधमतकरो तपस्वीबोल्यो तुमकहौ सोई होगी ॥ ५ ॥ सोई भयो धनसब अलोपभयो तब साधुनें देषकै अतिदुःख पायो साधुफिरबिचार करतभयो ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

जामतकराई अच्छेसुगंध तेलसै उबटएाकरायस्नान कराया ॥ ४४ ॥ अच्छेभोजन करवाय इनको राजानैवस्त्रआभूषएा सवारी सहित साधुकोदेत भयो ॥ ४५ ॥ जब राजानेंदियो तबतौबहुतप्रसन्नभयो ॥ ४६ ॥ हेराजा कैदमैं हमने बहुतदुष पायो सोराजा अबअपनेदेशको जांयग जोतुह्मारी आज्ञाहोगीतौ यहसुनकै राजा खजाजीको बुलावत भयो ॥ ४७ ॥ राजाषजांजीसे यह कहत भयो इनकोधन

भोजयित्वासुमधुरैर्भोज्यैरुच्चावचैर्नृपः ॥ राजयोग्यैरलंकारैर्वाहनैश्चतथाविधैः ॥ महार्हवस्त्राभरणैःपूजयामासतौमुदा ॥ ४५ ॥ अब्रवीत्पूजितःसाधुर्जामात्रासहितोन्नृपं ॥ ॥ साधुरुवाच ॥ ॥ कारागारेबहुविधंदुःखंप्राप्तमतःपरम् ॥ ४६ ॥ आज्ञापयमहाराजेंदेशंयातुंकृपानिधे ॥ श्रुत्वासवचनंराजाप्राहकोष्ठाधिकारिणं ॥ ४७ ॥ गृहीत्वायावतीनौकाधनपूर्णाइहागमत् ॥ देह्यस्मैधनपूर्णास्तास्तावतीस्त्वंत्वरान्वितः ॥ राजकिंकरइत्युक्तस्तथाचक्रेतिमानयन् ॥ ४८ ॥ प्रेम्णातौयापयामासस्वदेशंधरणीपपतिः ॥ गीतवादित्रमांगल्यबहुमानपुरःसरं ॥ ४९ ॥ इतिइतिहा० साधुवैश्योपाख्यानेसाधुस्वदेशगमनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥

लायेहो ताधनको चार गुना करके नौका भरदो तबकिंकर राजाके बचन सुनकर तैसेहीकरत भयो ॥ ४८ ॥ फिर राजाप्रेम सहित कहत भयोकिं तुम अपने देशकौ कुशलपूर्वक शीघ्रही सिधारौ जब

तुह्मारी जात है और कहां वास है काहेके अर्थ आए कैसे तुह्मारी यह दशा भई सो तुम सारी कहो ॥ ३८ ॥ तब साधू कहत भयो रत्नपूरमें वसेहैं बनियाजातिहैं बनिजके अर्थ आये हैं आ जीवकाकरेहैं ॥ ३९ ॥ मणिमोती बेचनेको तुह्मारे नगरमैं आयेहें तुह्मारे दूत चोरभाव करिकैं बांध लायेहैं ॥ ४० ॥ सो हम चोरनहिं है राजा तुमने बिचार नहीं किया सो विधाताकों प्रतिकूल हो-

साधुरुवाच ॥ ॥ रम्येरत्नपुरेवासोवणिक्जातौजनिर्मम ॥ वाणिज्यार्थं महाराजवाणिज्यंजीविकावयोः ॥ ३९ ॥ माणिमुक्तादिविक्रेतुमागतंतव पत्तने ॥ राजदूतैःसमानीतावध्वौचौरविभाविति ॥ ४० ॥ आवान्नचौरौरा जेंद्रतत्वतस्त्वंविचारय ॥ प्रतिकूलेविधौकोवदशांप्राप्नोतिवैपुमान् ॥ ४१ विनापराधंश्रीकृष्णोमणिचौर्यापवादवान् ॥ निवेदितमशेषेणपुण्यश्लोक शिखामणे ॥ ४२ ॥ युक्तंयत्कुरुराजेंद्रेत्युत्त्कातूष्णींबभूवतुः ॥ श्रुत्वातुनि श्चयंकृत्वातयोर्बंधनमोचनम् ॥ ४३ ॥ कारयित्वापरिष्कारंकारयामासना पितैः ॥ स्नापयामाससुरभितैलैरुद्वर्तनैस्तथा ॥ ४४ ॥

नेसे यह दशा भई हमारी ॥ ४१ ॥ सो विनाअपराध जैसे श्रीकृष्णको मणिकी चोरी लगीथी तिनलोकके स्वामीको ताहां हमारी कौंनचलावै ॥ ४२ ॥ सो राजा जैसें जोजानो सो करो यह कह साधु चुपहो रहो तब राजा सुनकै निश्चयकरि दोनोंको बेड़ी कटाय ॥ ४३ ॥ नाईकोबुला यह

योथोकुछरात्रीबाकीरहीथी तबस्वप्नदिया ॥३२॥ वासमयब्राह्मणकोस्वरूपधारिकैमीठीपियबाणी सैबोले हेराजासाधूविनाअपराधबांधराखेहैं तिनकोछोडदे नहींतोशीघ्रहीतुमारोनाशकरडारोंगो यहकहवहीअंतर्ध्यानहोगये राजाकीनिद्राजागी ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ विस्मयहोयकैराजाउठतभयो

उवाचविप्ररूपेणबोधयन्सकलागिरा ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठराजेंद्रतौसाधूपरिमोचय ॥ ३३ ॥ अपराधंविनाबद्धौनोचेच्छन्नोभवेत्तव ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णुर्विनिद्रोनृपतिस्तदा ॥ ३४ ॥ विस्मितःसहसोत्थायदध्यौब्रह्मसनातनं ॥ गुरुपादांबुजंचैवकृतनित्योचितक्रियः ॥ ३५ ॥ स्पृष्ट्वाघृतादिमांगल्यंसिंहासनमुपाविशत् ॥ ततोराजास्वप्नवृत्तंमंत्रिभ्यःसन्यवेदयत् ॥ श्रुत्वाराज्ञोवचःसभ्याउत्तरंप्रददुर्मुदा ॥ राजंस्तेयच्छ्रुतंस्वप्नेसत्यमेतन्नसंशयः ॥ ३६ ॥ तेषांमतंसमाज्ञायतावानेतुंसमादिशत् ॥ आनीयसाधुंपप्रच्छसत्यमालंब्यसन्निधौ ॥ ३७ ॥ राजोवाच ॥ ॥ कुत्रवासःकिंकुलंवाजीविकाकाचवांपुरे ॥ कथमत्रागतौवापिप्राप्तौकेनदशामिमां ॥ ३८ ॥ ॥ ६ ॥

सनातनब्रह्मकोध्यानकरतभयोगुरूकेचरनकोध्यानकरतभयो नितप्रतिक्रियाकर्मसबकरतभयो ॥ ॥ ३५ ॥ घृतादिकमंगलवस्तुतिनकौस्पर्शकरकरके सिंहासनपरआवतभयो सभासेकही याकौ बंधनकेकारनकहौ ॥ ३६ ॥ फिरसबकेमतकोसुनकरबुलावतभयो ॥ ३७ ॥ पूछातुमकौनहौ कौन

तब सतानंद ब्राह्मण बोले ऐसेही होयगी तुमनिश्चैकरिकै आपको घरकोजाओ ॥ २६ ॥ तब यह घरकोगई तौमाताको क्रोधकरिबोली इतनी देर तुमकहांरही तब वाकन्यानै सत्यनारायणकी पूजाकी सबवृत्तांतकह्यौ ॥ २७ ॥ कलियुगके विषै प्रत्यक्षफलके देनहारे हैं सत्यनारायण भगवान्

ततःसात्वरितंत्दृष्टाध्यायंतीस्वाश्रमंययौ ॥ मात्रानिर्भर्त्सितेयंतंकालंकुत्रस्थिताशुभे ॥ ततस्तुमातरंप्राहसत्यनारायणार्चनम् ॥ २७ ॥ कलौप्रत्यक्षफलदंसर्वतःक्रियतेनरैः ॥ कर्तुमिच्छाम्यहंमातरनुज्ञातुंत्वमर्हसि ॥ ॥ २८ ॥ देशमायातुजनकःस्वामीचममकामना ॥ मात्रासहेतिनिश्चित्य भिक्षार्थंनगरंययौ ॥ २९ ॥ अनायासेनसंप्राप्तंद्रव्यंबहुगुणान्वितं ॥ तेनसंभृतसंभारापूजांचक्रेकलावती ॥ ३० ॥ लीलावतीचतन्माताभक्त्याकार्षीत्प्रपूजनम् ॥ कर्मणातेनतुष्टोभूत्सत्यनारायणःस्वयं ॥ ३१ ॥ नर्मदातीरनगरेराज्ञःस्वप्नंसमादिशत् ॥ रात्रिशेषेस्वपर्यंकेनिद्रांकुर्वतिराजनि ॥ ३२ ॥

तिनके व्रतको सबही करे हैं सो तुमआज्ञा देव तौ हमकरें ॥ २८ ॥ हमारे पितास्वामी परदेशसें आवैं ताकेअर्थ निश्चयकरिके मातासहित भिक्षाकरते शहरमे जातभई ॥ २९ ॥ वाद्रव्यकी सामग्रीलायकै कलावतीसहित पूजाकरेनलगी ॥ ३० ॥ विधिपूर्वक पूजाकरी तब तौ सत्यनारायण प्रसन्न होतभये ३१ ॥ और प्रसन्नहोकै राजाको स्वप्नदिया और राजा अपने पलंगपर निद्राभ

हैं ॥ २० ॥ तब ससुरजमाई दोनों बिलाप करत भये देखो भगवान्‌की अदृष्टसे इनको सब धन जातभयो ॥ २१ ॥ या धनको चोरलेगये इनकीस्त्री बहुत दुषीभई याते अनंतर दोनोमा बेटी बिचार करतभई ॥ २२ तापीछे बस्त्रआभूषण बच्यौ ताके बेच करिके भोजन करत भई अरु ब

समाःश्वशुरजामात्रोर्द्वौदशेयुर्विषादिनोः ॥ प्रतिकूलेहरौतस्यधनंयच्चगृहे स्थितम् ॥ २१ ॥ हृतंतच्चावनीपालैश्चोरैर्भार्यापिदुःखिता ॥ अथसाध्वीसह सुताभर्तुःकल्याणमिच्छती ॥ २२ ॥ वासोलंकरणादीनिविक्रीयबुभुजेकिल ॥ यदानासीद्गृहेकिंचित्तदासाकाष्ठमाहरत् ॥ २३ ॥ अथैकस्मिन्दिनेकन्या भोजनाच्छादनंविना ॥ गत्वाविप्रगृहेपश्यत्सत्यनारायणार्चनं ॥ २४ ॥ तत्र द्विजंजगन्नाथंप्रार्थयंतंविलोक्यसा ॥ स्वयंविधिनियोगेनप्रार्थयंतीदम ब्रवीत् ॥ २५ ॥ सत्यनारायणहरेपिताभर्ताचमेगृहं ॥ आगच्छत्वर्चयिष्या मिभवंतंकरुणाकरम् ॥ तद्वाक्यसमकालंतुद्विजैरुक्तंतथास्त्विति ॥ २६ ॥

हुतखेदकोप्राप्त होतभई ॥ २३ ॥ तातेपरे एकदिवस साधकीकन्या भोजनबस्त्रबिना सतानंदके घर जाहिदेषतभई कि सत्यनारायणकीपूजा करैहो ॥ २४॥ तब बोली हे जगतकेनाथ तुमसों प्रार्थना करूहूं ॥ २५ ॥ सत्यनारायण भगवान् मेरे पिता और स्वामी घरमें आवे तौ तुमारी पूजाकरैं

है अपनी रक्षाको अर्थ तिनको बांधत भये ॥ १४॥ सब धनसहीत उन दोनोंको राजाके सन्मुख लाये सत्यनारायणकी पूजामैं दृष्टि नकरतभयौ ॥ १५ ॥ उनको धन आपने खजानेंमैं धरत भये और उनके लोहेकी बेरी पावनमैं और गलेमैं तौक डारत भयौ ॥ १६॥१७॥ ऐसे दोनोंकी दशाभई

चोरोयमितिनिश्चित्यबबंधुस्तंस्वरक्षणात् ॥ १४ ॥ सधनंसहजामात्रान्नृपांतिकमुपानयत् ॥ प्रतिकूलेहरौतस्मिन्राज्ञापिनविचारितम् ॥ १५ ॥ घनागारेधनंनीत्वाबध्नीतैतौसुदुर्मदौ ॥ कारागारेलोहमयैःशृंखलैर्गलपादयोः ॥१६॥ इतिराजाज्ञयादूतातथाचक्रुर्निबंधनं ॥ जामात्रासहितःसाधुर्विललापभृशंमुहुः ॥ १७ ॥ हापुत्रतातताततेतिजामातःक्वगतंधनम् ॥ क्वस्थिताचसतीभार्यापश्यधातुर्विपर्ययं ॥ १८ ॥ निर्दयेनविधात्रावाहेतुशून्येनछद्मना ॥ निमग्नौदुःखजलधौकोवारक्ष्यतिसंकटात् ॥ १९ ॥ मयाबहुतरंधातुर्विप्रियंवापुराकृतं ॥ कर्मणश्चविपाकोयंनजानेकस्यवाफलं ॥ २० ॥

तब विलापकरत भयो बारबार हातात हातात ऐसे साधुको जमाई धुनिकरत भयो हमारी सतीजो भार्या जाने कहां होगी देषो विधाताकी उलटी रीति है ॥ १८ ॥ देषो विधाता निर्दयने हमारो घर शून्यकर दियो यह कहके दुषरूपी समुद्रमैं डुबतभयो यह कब संकट दूर होयगा ॥ १९ ॥ मैने अनेक प्रकारसें धातुक्रिया धरी न जानै कौन कर्मके योगसें हमारी यह गतिभई है ऐसे कहत भये

महाराजतुमसुनो रत्नपुरमैं चौर आवत भये संपूर्ण द्रव्य चुरायके लेगये ॥ ८ ॥ ऐसे राजा किंकरनसों विचार करके कहत भयो कि तुम जाओ चोरनको पकडलाओ ॥ ९ ॥ जो तुम नलओगे तौ तुमको मरवा डालुगा ऐसें दूतनसों कहत भयो तब दूतराजाके बचन सुनकै किंकर चलत भये

उवाचचतदावाक्यंभोःशृणुष्वधरापते ॥ चौरैस्तवहृतंरत्नादिकंसर्वमहाधनं ॥ ८ ॥ इतिविज्ञापितोराजाकिंकराधिपमुक्तवान् ॥ शीघ्रंयाहिप्रगृत्याथचोरंसधनमाहर ॥ ९ ॥ नोचेद्धनिष्येसगणमितिदूतंसमादिशत् ॥ इतिवाक्यंसमाकर्ण्यराज्ञोदूतान्ययुक्तसः ॥ १० ॥ धनंकुत्रापिनप्रापुर्नचोरंराजकिंकराः ॥ तदाचव्यलपन्त्सर्वेचोरान्वेषणतत्पराः ॥ ११ ॥ हंतास्मानसगणान्राजाकिंकुर्मःस्यात्कुतःसुखं ॥ इत्येवंविलपंतस्तेविचेरुर्निशिकिंकराः ॥ १२ ॥ आपणेददृशुःसाधुंधनवंतंविदेशिनं ॥ ऊचुःपरस्परंदृष्टामहदस्यकुतोधनम् ॥ १३ ॥ मुक्ताहाराराजकीयाभांतिचास्यगलेस्थिताः ॥ ध ॥

॥ १० ॥ तब दूत चलके विचारत भये धनकही प्राप्त होयगो न चोर मिलेंगे यहविचारके मिलाप करत भये ॥ ११ ॥ तब दूतनको सिर्दार वानै कह्यौ राजा हमारे गणनकौ मरवाडालैगेतौ अब हमको सुख कहां यह विचार करते रात्रि वितीत करी प्रभात होत चालत भये ॥ १२ ॥ मिलाय करतेचलेजात हैं इतनेमें एक बनियां ताके पास अति धन देख्यो ॥ १३ ॥ गलेमें मोतीनकी माला पडी

तब पूजाको भूलके जमाई सहित बनिजकोचलो ॥ १ ॥ साधू नर्मदा नदीके तीर एक नगरमैं निवास लेकरिकें बेचनेको प्रारंभकियो वहां बहुतकाल रहत भयो ॥ २ ॥ मनबाणीकरकै कियो जो संकल्प सत्यनारायणकी पूजाको नहीं करी ताके विक्षेपसै इनकों बिपत्ति भई ॥ ३ ॥ एकदीन राजाके

सूतउवाच ॥ ॥ अथसाधुःसमादायमणीन्दूरंगतोहिसः ॥ देशाद्देशांतरंगच्छन्ददर्शसुमनोहरं ॥ १ ॥ नगरंनर्मदातीरेतत्रवासंचकारसः ॥ कुर्वन्क्रयंविक्रयंचरत्नानांहिकदापिन ॥ २ ॥ कर्मणामनसावाचाकृतवान्हरिसेवनं ॥ तेनकर्मविपाकेनतापमापाचिराद्वणिक् ॥ ३ ॥ एकस्मिन्दिवसेराज्ञोगृहेरात्रौतमोवृते ॥ ज्ञात्वानिद्रागतान्सर्वान्हृतंचौरैर्महाधनं ॥ ४ ॥ मुक्तामालाबहुविधानीतावैचंद्रसुप्रभाः ॥ मणिरत्नादिवैकाममलंकारादिभूषणं ॥ ५ ॥ सद्वस्तुजातंराज्ञश्चगृहीत्वास्वालयंययुः ॥ प्रभातेबोधितोराजासूतमागधबंदिभिः ॥ ६ ॥ प्रातःकृत्यंसमाप्याथसदसिप्राविशच्चसः ॥ ततस्तत्रसमायातःकिंकरोधनपालकः ॥ ७ ॥ घरमें चोर आये सब मनुष्यनकों सोवत देखकै बहुत द्रव्य चुराय लेगये ॥ ४ ॥ मोतिनकी माला अनेक प्रकारका चंद्रमाकीसीकांतीजिनकी मणिलगीतिन मैं ऐसे गहने सब लेगये ॥ ५ ॥ तब प्रभातको राजाको खबर भई तब राजा चौंकीदार पहरुवान को बुलावत भये ॥ ६ ॥ तब प्रा तःकृत्य ताको समाप्त करकें तहां आवत भये अरु कहत भये ॥ ७ ॥

काचन पुरमें एक नगर तामैं शंखपतिनाम बनिया बहु कुलीन रूपवान् शीलवंत गुण करिके सहित ॥ २५ ॥ ताके शुभ लग्न देषकें वाकोवरण करतभयो बहुत प्रकार मंगल सहित अग्निके निकट करतो भयो ॥ २६ ॥ और वेदके शब्दनवाजा सहित कन्याको देतभयो अरु मणि मोती मूगां

नगरेकांचनपुरेतत्रशंखपतिर्वणिक् ॥ कुलीनोरूपसंपन्नःशीलौदार्यगुणान्वितः ॥ २५ ॥ वरयामासतंसाधुर्दुहितुःसदृशंवरं ॥ शुभेलग्नेबहुविधैर्मंगलैरग्निसंन्निधौ ॥ २६ ॥ वेदवादित्रनिनदैर्ददौकन्यांयथाविधि ॥ मणिमुक्ताप्रवालानिवसनंभूषणानिच ॥ २७ ॥ महामोदमनाःसाधुर्यौतकंप्रददौबहु ॥ प्रेम्णानिवासयामासस्वांतेजामातरंततः ॥ २८ ॥ तंमेनेपुत्रवत्साधुःसचतंपितृवत्सुधीः ॥ भूयस्यतीतकालेपिसत्यनारायणार्चनं ॥ २९ ॥ अकृत्वाधनवृद्धीच्छुर्धनगर्वेणमोहितः ॥ जामात्रासहितःसाधुर्वाणिज्यार्थययौपुनः ॥ ३० ॥ इति इतिहाससमुच्चयेसत्यनारायणकथायांसाधुवैश्याख्यानंनामतृतियोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

वस्त्र गहने इत्यादि अनेक देतभयो ॥ २७ ॥ औरतब साधु बहुत प्रसन्न होय करकै गाने बजाने हारोंको ब्राह्मणो सहित सबको द्रव्य देत भयो ॥ २८ ॥ ताकन्याको पुत्रकी तरह राषत भयो तब याको बहुत कालपीछे विचार करके सत्यनारायणकी पूजाकरी ॥ २९ ॥ ३० ॥ इतिस० तृती० ॥ ३ ॥

पायो ॥ १८ ॥ प्रसादताको भोगलगायकै अपने घरको आवत भयो भगवानको स्मरन करतोभयो ॥ १९ ॥ तब नानाप्रकारके मंगलस्त्री करत भई घरमें आयकै कौतुक भयो ॥ २० ॥ याकी स्त्री लीलावती जोहै सो गर्भ धारतभई ॥ २१ ॥ तबयाके कमलसेनेत्र स्वरूपपावन ऐसीकन्या उत्पति

जगामस्वालयंसाधुर्मनसाचिंतयन्हरिं॥ स्वगृहानागतेतस्मिन्नार्योमंगल पाणयः॥ १९ ॥ मंगलानिविचित्राणियथोचितमकुर्वत ॥ विश्रांतःस्वपुरे साधुस्तदापरमकौतुकी॥ २० ॥ऋतुस्नातासतीलीलावतीपर्यचरत्पतिं ॥ गर्भंधृतवतीसाध्वीसमयेसुषुवेतुसा॥ २१॥ कन्यांकमलपत्राक्षींबांधवामोदकारिणीं ॥ साधुःपरांमुदंलेभेविततारधनंबहु ॥ २२॥ विप्रानाहूयदैवज्ञान्कारयामासमंगलम्॥ लेखयित्वाजन्मपत्रंनाम्नाचक्रेकलावतीं ॥ २३ ॥ कलानिधिकलेवासौवबृधेसाकलावती ॥ प्रौढांकालेनतांदृष्ट्वाविवाहार्थमचिंतयत्॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

होतभई तब साधुबहुत प्रसन्नभयो अरुबहुतधन सबकों देतभयो ॥ २२ ॥ और बेदके जोवक्ता पंडित ब्राह्मनको बुलायके मंगल करतभयो वाकी जन्मपत्रीलिषी और कलावती ताको नाम धरत भयो सो कलावती चंद्रमाकीकला जैसे बढत भई तब बहुत कालबीते सामर्थवान् होत भई तब विवाह किचिंताकरत भयो ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

निर्धनको धनप्राप्तहोय जाकेसंतान नहोय ताके संतान होय जाको राज्यछूटै ताको राज्यमिलै अंधेको नेत्र मिलैहैं निश्चै करिकैं ॥ १३ ॥ कैदी कैदसे छुटजाय जाको भयहोय ताको भय छुटजाय जोजो कामनाकरिकें करे सो प्राप्तिहो ॥ १४ ॥ ताविधानको सुनकै दंडवत करत भयो सभाके

निर्धनोपिधनाढ्यःस्यादपुत्रोपुत्रवान्भवेत् ॥ भ्रष्टराज्योलभेद्राज्यमंधोपि स्यात्सुलोचनः ॥ १३ ॥ मुच्यतेबंधनाद्बद्धोनिर्भयःस्याद्भयातुरः ॥ मनसा कामयेद्यद्यल्लभेततत्तदर्चनात् ॥ १४ ॥ विधानंतुततःश्रुत्वाचैलंचध्वागलेस कृत् ॥ दंडवत्प्रणिपत्याहकामंस्वंसंन्ययवेदयत् ॥ १५ ॥ अनपत्योस्मिभग वान्वृथैश्वर्योवृथाधनः ॥ पुत्रंवायदिवाकन्यांलभेयत्वत्प्रसादतः ॥ १६ ॥ पताकांकांचनींकृत्वापूजयिष्येकृपानिधिं ॥ सभ्याःसर्वेनुमोदंतांकामना सिद्धिरस्तुमे ॥ १७ ॥ सभ्याःप्रत्युत्तरंदद्युरेवमस्त्वितिसादरं ॥ हरिंप्रणम्य सभ्यांश्चप्रसादंभुक्तवांस्ततः ॥ १८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

आगे कहतभयो ॥ १५ ॥ हे भगवान् मेरे संतान नहीं है तातें यह ऐश्वर्य धनवृथाहै सो तुह्मारे प्रसादतें पुत्रवा कन्या मोकों प्राप्तिहोय ॥ १६ ॥ कांचनकीपताका बनायकै हे कृपानिधि तुमारी पूजा करोंगो संपूर्ण सभाके आगें कहत भयो मेरी कार्य सिद्धी होय तब पूजाकरो ॥ १७ ॥ तब सभाप्रत्युत्तर देतभई तथास्तु ऐसेही होगी तब भगवान्को नमस्कार करिकै सभासहित प्रसाद

तब नौकासे उतरके मल्ललीलादेषत भयो कर्ण धारके निवासीकर रहेहैं ॥ ७॥ सो उतरिकै यज्ञस्था नको देषकै आदर सहित पूछतभयो ॥ ८ ॥ यास्थानमैं सभाकहाकरै है और कौन पूजन करोहो तब सभाके मनुष्यबोलत भये सत्यनारायणके पूजन करैंहैं ॥ ९ ॥ भैया बंधुसहित राजा पूजन

तरणीभ्यःसमुत्तीर्यमल्ललीलाविलासिनः ॥ कर्णधारानुगावीरायुयुधुर्मल्ल लीलया ॥ ७ ॥ स्वयमुत्तीर्यसामात्योलोकान्पप्रच्छसादरं ॥ यज्ञस्थानंस मालोक्यप्रशस्तांमुदमाययौ ॥ ८ ॥ किमत्रक्रियतेसभ्याभवद्भिर्लोकपू जितैः ॥ सभ्याऊचुःप्रमुदिताराज्ञालोकानुकंपिना ॥ ९ ॥ पूज्यतेबंधुभिः सार्द्धंसत्यनारायणोविभुः ॥ त्वमप्यत्रक्षणंतिष्ठसत्यनारायणार्चने ॥ १० कथांश्रुत्वाविधानंचप्रसादंभुंक्ष्वसादरं ॥ इतिश्रुत्वावचस्तेषांसाधुरुत्सुकमा नसः॥ पुनःपप्रच्छकरणेफलंकिंकोविधिस्तथा॥ ११ ॥सभ्याऊचुः॥नाराय णार्चनेवक्तुंफलंनालंचतुर्मुखः॥श्रृणुसंक्षेपतोत्येतत्कथयामस्तवाग्रतः ॥ १२

करै है तुमभी इच्छामात्र बैठो प्रसादको भोजनकरो ॥ १० ॥ और कथाको श्रवण करो सत्यनाराय णकी पूजाकरिके पूछत भयो याको कहा फलहै कौन बिधानहै ॥ ११ ॥ तब तो सभाके मनुष्य कहत भये बिस्तार पूर्वक तुमसे हमकहतहैं ताको सुनो ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

अब सूतजी सौनकादिक ऋषिन सौं कहतहैं इतिहास ताको वर्णनकरैं जैसे राजके उपदेश तें साधु कृतार्थ भयो ताकों कहतहैं तुमश्रवणकरौं ॥ १ ॥ मणिपूरपती राजा चंद्रचूड बडो यशस्वी सभा सहित सत्यनारायणको पूजन करैहो ॥ २ ॥ यातैंअनंतर रत्नपूरको निवासी वणिक लक्षपति व्यापारके अर्थ नौका भरनदीके तटपरजातभयो ॥ ३ ॥ बहुतसे नगर रत्नको देषतभयो फिर राजाके न

सूतउवाच ॥ ॥ अथातोवर्णयिष्यामिगाथांसाधूपचारितां ॥ साधुर्यथाकृतार्थोभून्नृपोपदेशतोवणिक् ॥ १ ॥ मणिपूरपतीराजाचंद्रचूडोमहायशाः ॥ सहप्रजाभिरानर्चसत्यनारायणंविभुं ॥ २ ॥ अथरत्नपुरस्थायीसाधुर्लक्षपतिर्वणिक् ॥ धनैरापूर्यतरणीःसमागच्छन्नदीतटे ॥ ३ ॥ ददर्शमंडपंतत्र नानादेशनिवासिभिः ॥ मणिमुक्ताविरचितैर्वितानैःसमलंकृतं ॥ ४ ॥ वेदवादांश्चशुश्रावगीतवादित्रसंयुतान् ॥ रम्यंस्थानंसमालोक्यकर्णधारंसमादिशत् ॥ ५ ॥ विश्रामयात्रातरणीरिदंपश्यामिकौतुकं ॥ भर्त्रादिष्टस्तथाचक्रेकर्णधारःससत्वरं ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

गरमैं आवतभयो तहां कहा देषत भयो कि राजा सभासहित मणिमोतिनके चंदोवाबनाय और नानाप्रकारके आभूषण सहित बेदके शब्दनको सुनिरह्योहै ॥ ४ ॥ अरुगीतगायबाजे बजायरहेहै सुंदर स्थानको देषके साधु उतरतभयो ॥ ५ ॥ तहां विश्रामकरिके यह कौतुक देषतभयो ॥ ६ ॥

सत्यनारायणकी पूजाकरैं यह निश्चैकरीकि जो द्रव्य याकामको मिलेगो तासौं हम पूजन करेंगे ॥ २५ ॥ उन्हेंवादिन चौगुनो द्रव्यमिलो ताद्रव्यसौंघरआये स्त्रीसे सारो वृत्तांत कह्यौ ॥ २६ ॥ वाकी स्त्री सुनकै प्रसन्नभई और पतिकी आज्ञा पाय करिकै पूजाकी सब सामग्री लावत भई जैसें कही तैसें ॥ २७ ॥ ताके अनंतर अपने गणातिन सहित पूजन करतभये और कथा अंतमें भक्तिमु

सत्यनारायणःपूज्यःकाष्ठलभ्येनयावता ॥ इतिनिश्चित्यमनसाक्रीत्वाकाष्ठानिलेभिरे ॥ २५ ॥ चतुर्गुणधनंत्दृष्टाःस्वंस्वंभवनमाययुः ॥ मुदास्त्रीभ्यःसमाचख्युर्वृत्तांतंसर्वमादितः ॥ २६ ॥ ताःश्रुत्वात्दृष्टमनसःपूजासंभारमादरात् ॥ पतीनामाज्ञयाचक्रुर्यथाश्रुतविधानतः ॥ २७ ॥ ततोमिलित्वास्वगणैःपूजांचक्रुर्यथोचितं ॥ कथावसानेतेभक्त्याप्रणेमुर्गतपातकाः ॥ २८ ॥ स्वजातिभ्यःपरेभ्यश्चप्रसादंव्यभजंस्तदा ॥ पूजाप्रभावतोभिल्लाःपुत्रदारादिभिर्युताः ॥ २९ ॥ भुक्त्वाभोगान्यथेष्टंतेवैष्णवंधामलेभिरे ॥ ३० ॥ इतिश्रीइतिहाससमुच्चयेसत्य०शतानंदनिषादसंवादे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

क्तिकर नमस्कार करतभये याके पाप सब नाशको प्राप्तभये ॥ २८ ॥ अपनी जातवा पराई जातहो भगवानके प्रसादमैं विचार नकरैं पूजाके प्रभावतें भिल्ल धन पुत्र करिकै युक्त होते भये ॥ २९ ॥ जसे मुक्त भोग्य प्राप्तभये तैसें वैष्णव धामको प्राप्त होतभयो ॥ ३० ॥ इति०स०कथाभा०टी०द्वि०यः०

॥ १९ ॥ भगवान् संपदासे नहीं प्रसन्नहै केवल भक्तिसे प्रसन्नहै ॥ २० ॥ जैसें गीध गज गनिका अ जामेल हनुमान् बिभीषण और जो पापीदैत्य भगवानकी शरणआये तिनकी जैसे बनी ऐसे भक्ति करिकै सबको बनेहैं कोईकरै ॥ २१ ॥ ऐसें सुनकै राजानै भी पूजनकरी सबसामग्री इकठौरी कर कै पूजनकरत भये ऐसे निषाद तुमकरी जैसे प्रीति सहित सत्यनाराणस्वामीकी पूजाकरौ ॥ २२

संपदोदाद्धरि:प्रीत्याभक्तिमात्रमपेक्षते ॥ गृध्रोगजोवणिग्व्याधोहनूमान्स बिभीषणः ॥ २० ॥ येन्येपापात्मनोदैत्यावृत्रकायाधवादयः ॥ नारायणां तिकंप्राप्तामोदंतेद्यापियद्दशाः ॥ २१ ॥ इतिश्रुत्वानरपति:पूजासंभारमा दरात् ॥ निषादत्वमपिप्रीत्यासत्यनारायणंभज ॥ २२ ॥ इहसर्वंसुखंप्रा प्यचांतेसान्निध्यमाप्नुयात् ॥ कृतकृत्योनिषादोभूत्प्रणम्यद्विजपुंगवं ॥ ॥ २३ ॥ सगत्वास्वगणान्प्राहमाहात्म्यंहरिसेवने ॥ तेत्दृष्टमनसःसर्वेसमयं चक्रुराद्दताः ॥ २४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

यालोककेबिषै सुषभोगकरेंगे और जब मृत्युहोयगी तब भगवानके निकटप्राप्तहोंयगे यह सुनके निषाद कृतकृत्य भयो सतानंदको नमस्कार करके जात भयो ॥ २३ ॥ अपने स्वाधीनतास साथी न केपास आयकै सत्यनारायणकी पूजाको माहात्म्य कहतभयो तब सुनकै सब प्रसन्नभये यह बिचार करतभये ॥ २४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

देवताके मंदिरमैं तथा नदीकेतीर मंडल बनायताके मध्य पूजनकरै जैसे कहीतैसै ॥ १३ ॥ संध्याके समय एक घट जलसैं भरके वाके ऊपर शालिग्राम शिला स्थापन करै और अपने भाई बंधुको बुलायकै ॥ १४ ॥ गेहूको आटा सवासेर आदिप्रमाण तामैं दुग्ध अरु शर्करा आदि घृत सब

सायंकालेशिलांस्थाप्यपूर्णकुंभेकुलागतं ॥ स्वाचार्यंस्वगणंचैवसमाहूय सुहृज्जनान् ॥ १४ ॥ गोधूमचूर्णपादोर्ध्वप्रस्थकादिप्रमाणकं ॥ दुग्धेनैताव तायुक्तंघृतखंडसमन्वितं ॥ १५ ॥ पायसापूपसंयावदधिक्षीरमथाहरेत् ॥ उच्चावचैःफलैःपुष्पैर्धूपैर्दीपैर्मनोरमैः ॥ १६ ॥ पूजयेत्परयाभक्त्याविभवेस तिविस्तरैः ॥ नतुष्येद्द्रव्यसंभारैर्भक्त्याकेवलयायथा ॥ १७ ॥ भगवान्परि तःपूर्णोनमानंवृणुतेक्वचित् ॥ दुर्योधनकृतांत्यक्त्वाराजपूजांजनार्दनः ॥ ॥ १८ ॥ विदुरस्याश्रमेवासमातिथ्यंजगृहेविभुः ॥ श्रीदाम्नस्तंदुलकणान् जग्ध्वामर्त्यसुदुर्लभाः ॥ १९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

मिलावै ॥ १५ ॥ खीर पूवा कसार येबनायकै अछे सुंदर फल धूपदीपता करिकै पूजनकरै ॥ १६ ॥ परम भक्ति सहित अनेक प्रकारकी सामग्री सहित भगवान् द्रव्यसौंनहीं प्रसन्नहैंकेवलभक्तिसेप्रसन्न हैं ॥ १७ ॥ भगवान्परिपूर्ण हैं भक्तके बसहैं जैसै दुर्योधनकी सेवा त्यागकै पूजाको छोडकै विदुर के आश्रममें वासकियो ॥ १८ ॥ सागजोहै ताको भोजनकियो और सुदामाके तंदुल भोगलगाये

सामग्रीहै सो कहो ॥ ७ ॥ तुम साधुहो समचित्तहो गुन मतिराषौ दुषित जो मनुष्य तिनके दुष दूरकरौ ॥ ८ ॥ जबनिषादनै ऐसी पूछी सतानंदसै बिधिपूर्वक इतिहास कहौ तब सतानंदवासै कहतभये एक राजाहै केदारुमणिपुर नगरमैं बडो धर्मात्मा है ॥ ९ ॥ चंद्रचूडावाकोनामहैं प्रजामें हितरक्तेथा त

साधूनांसमचित्तानामुपकारवतांसतां ॥ नगोप्यंविद्यतेकिंचिदार्तानामार्तिनाशं ॥ ८ ॥ इतिपृष्टेविधिंवक्तुमितिहासमथाब्रवीत् ॥ शतानंदउवाच ॥ राजासिद्धार्मिकःकश्चित्केदारमणिपूरके ॥ ९ ॥ चंद्रचूडइतिख्यातोप्रजापालनतत्परः ॥ शांतोमधुरवाग्धीरोनारायणपरायणः ॥ १० ॥ ममाश्रमंसमायातःसत्यनारायणार्चने ॥ विधानंश्रोतुकामोसौमामाहसादरंवचः ॥ ११ ॥ मयायत्कथितंतस्मैतन्निबोधनिषादज ॥ संकल्प्यमनसाकामंनिष्कामोवाजनःशुभम् ॥ १२ ॥ पूजासंभारमाहात्म्यकृतनित्योचितक्रियः ॥ देवालयेस्थंडिलेवामेध्येपूजांसमाचरेत् ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

त्परहै शांतिहै स्वभावताकोमोठीवाणीहै बडो पराक्रमीहै भगवानकी सेवामैं तत्परहै ॥ १० ॥ सोचंद्रचूडराजा मेरे आश्रममैं आवत भयो नारायणकी पूजाके अर्थ वासे जो विधानकहासो सुनौ ॥ ११ ताको संकल्प करके कामनाविचारत भयो तथा निष्काम करिके ॥ १२ ॥ पूजाकी सामग्री लायकै

ष्णुदास जो है सो विधिपूर्वक भगवानकी पूजाकरैहै तबयानै जल पीकै बडो आश्चर्य मानो अपने मनमैं कहत भयो कहाकि याभिक्षुकके बहुत धन कहांतै आयो ॥ ३ ॥ तब निषाद विचारके देष्यो तबतो कछूनहींहो अब धन कौन यत्न करकै पायो ये विचारकै नमस्कार दंडवत करतभयो ॥ ४ ॥ यहधन तुमारे कहांतें आयो दरिद्र कहांगयो सोतुमकहौ हमारी सुनवेकी इच्छाहै ॥ ५ ॥

जलंपीत्वाविस्मितोभूद्भिक्षुकस्यकुतोधनं ॥ ३ ॥ योदृष्टोकिंचनोविप्रोदृश्यतेघमहाधनः ॥ इतिपप्रच्छभूदेवंप्रणम्यप्रांजलिर्मुदा ॥ ४ ॥ ऐश्वर्यंतेकुतोब्रह्मन्दुर्गतिस्तेकुतोगता ॥ आज्ञापयमहाबाहोश्रोतुमिच्छामितत्वतः ॥ ५ ॥ ॥ शतानंदउवाच ॥ ॥ सत्यनारायणस्यांगसेवयाकिन्नलभ्यते ॥ नकिंचित्सुखमाप्नोतिविनातस्यानुकंपया ॥ ६ ॥ ॥ निषादउवाच ॥ अहोकिमितिमाहात्म्यंसत्यनारायणार्चनं ॥ विधानंसोपचारंचउपदेष्टुंत्वमर्हसि ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

तबसतानंदकहतभये निषाद तें सत्यनारायणकी सेवा करिकै कहानही प्राप्तहोयहै उनकी कृपा बिन कुछ सुष नहीं प्राप्तहोयहै सो मेरे उपर सत्यनारायणकी कृपाहैं तातें यह धन मिलोहै ॥ ६ ॥ एबचन सुनके निषाद बोलतभये हे सतानंद सत्यनारायणकी पूजाकी कहा महात्महै कौन बिधानहै अरुकहा

कृत्य होत भये तब सबस्मरनकरत भये ॥ ७४ ॥ फिर सतानंद पृथ्वीमे गिरके नमस्कार करत भयो आदरसहित प्रसाद लेतभयो ताउपरांत सबमनुष्य धन्यधन्य कहत भये अपने गृहआश्रमको जातभये ॥ ७५ ॥ तबयाको प्रचार विशेष होतभयो सत्यनारायणस्वामी कैसे हैं और उनकी कथा कैसीहै भक्तिमुक्तिके देनहारी पापदूरकरनहारी है ॥ ७६ ॥ इतिसत्यना कथाभाषाटीकायांप्र० ॥ १ ॥

प्रणम्यभुविकायेनप्रसादंचादुरादरात् ॥ स्वंस्वंधामसमाजग्मुर्धन्यधन्येतिवादिनः ॥ ७५ ॥ प्रचचारततोलोकेसत्यनारायणार्चनं ॥ कामसिद्धिप्रदंभक्तिमुक्तिदंकलुषापहं ॥ ७६ ॥ इतिश्रीइतिहाससमुच्चयेसत्यनारायणकथायांशतानंदविष्णुसंवादेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ सूतउवाच ॥ अथेतिहासंश्रृणुतयथाभिल्लाःकृतार्थिनः ॥ विचरंतिवनेनित्यंनिषादाःकाष्ठवाहकाः ॥ १ ॥ वनात्काष्ठानिविक्रेतुंपुरींकाशींययुःक्वचित् ॥ एकस्तृष्णाकुलोयातोविष्णुदासस्यमंदिरं ॥ २ ॥ ददर्शविपुलैश्वर्यैसेवमानंद्विजंहरिं ॥

अबसूतजी कहतेहैं हे ऋषियों और इतिहाससुनो जैसे भिल्लकृतार्थ भये सो ताकों कहतहैं जैसे काष्टकेबेचनहारे निषादवनमैं फिरेहैं ॥ १ ॥ सोवोबनमें काष्ठबेचनेके अर्थ काशीमैं आवतभये तिनमें एकको बहुत प्यासलगी सो जल पीवनेको विष्णुदासके आश्रममैं जातभये तब यानेदेखाकि वि

भयो येही वृत्तांत ब्राह्मणीसे कहत भयो ॥ ६९ ॥ तबपतिकी आज्ञापायकै वा धनकी सामग्री लावत भई बंधुपरौसी तिन सहित सबको बुलावत भई ॥ ७० ॥ सबकों बुलाय करके सत्यनारायणस्वामी तिनकी पूजा करत भई तबतौ सत्यनारायण बहुत प्रसन्न भयो ॥ ७१ ॥ फिरतो प्र

सादरंद्रव्यसंभारमानयद्भर्तुराज्ञया ॥ आहूयबंधुमित्राणितथासान्निध्यवर्तिनः ॥ ७० ॥ सत्यनारायणंदेवमयजत्स्वगणावृतः ॥ भक्त्यातुतोषभगवान्सत्यनारायणःस्वयम् ॥ ७१ ॥ कामंदित्सुःप्रादुरासीत्कथांतेभक्तवत्सलः ॥ वव्रेविप्रोभिलषितमिहामुत्रसुखप्रदम् ॥ भक्तिंपरांभगवतितथातत्संगिसंगितां ॥ ७२ ॥ ॥ शतानंदउवाच ॥ ॥ रथंकुंजरंमंजुलंमंदिरंचहयंचारुचामीकरालंकृतंच ॥ धनंदासदासीगणंगांमहींचलुलायींसदुग्धांहरेदेहिदास्यं ॥ ७३ ॥ तथास्त्वितिहरिःप्राहतत्रांतर्दधेविभुः ॥ विप्रोपिकृतकृत्योभूत्सर्वेलोकाविसिस्मिरे ॥ ७४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

सन्न होत भयो कथाके अंतमै भगवान् बोलत भये तुह्मारी जो इच्छाहोय सोई वर मांगो तुमने भक्ति बहुत करी हम प्रसन्न भये ॥ ७२ ॥ तब सतानंद बोले महाराज हमको रथदो घोडादो हाथीदो सुंदर सुवर्नको गहनो धन दासदासी पृथ्वी गौदूध हे भगवान् दासकोयह सबदेहु ॥ ७३ ॥ तब भगवान् यहबोले तथास्तु ऐसोही होयगी बहुत करके यह कहकै भगवान अंतर्ध्यान हुए तब सतानंद कृत

कछुद्रव्यसोहमारी प्रीतिनहीं हैं हमतो भक्तके बसहैं सो याबिधान करिके हमारापूजनकरै याहीमैं प्रसन्नहोयहैं ॥ ६४ ॥ सो पुत्रपौत्रादिकरकै युक्तयालोकमैं सुष परलोकमैं आनंदकरोगे अरुजब मृत्युहोयगी तबमो समीप मेरेलोकमैं क्रीडाकरैगो ॥ ६५ ॥ जाकामना करिकै व्रतको करेगो सोई

द्रव्यादिभिर्नमेप्रीतिर्भक्त्याकेवलयायथा ॥ विधिनानेनविप्रेंद्रपूजयिष्यंतियेनराः ॥ ६४ ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्ताभुक्त्वाभोगान्यथेप्सितान् ॥ अंतेसान्निध्यमासाद्यमोदंतेतेमयासह ॥ ६५ ॥ यंयंकामयतेकामंप्राप्नुयात्तंममार्चनात् ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेविष्णुर्विप्रोपिहृष्टमानसः ॥ ६६ ॥ प्रणम्यागाद्यथाभीष्टंमनसाकौतुकाकुलः ॥ अद्याहंपूजयिष्यामिईश्वरंलब्धभिक्षया ॥ ॥ ६७ ॥ इतिनिश्चित्यमनसाभिक्षार्थीनगरंगतः ॥ विनादेहीतिवचनंलब्धवान्विपुलंधनं ॥ ६८ ॥ कौतुकाविष्टमनसाजगाम निजमंदिरं ॥ वृत्तांतंसर्वमाचख्यौब्राह्मणीसान्वमोदत ॥ ६९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

कामना सिद्धहोयगी इतिकहके भगवान अंतर्ध्यान होत भये और सतानंदप्रसन्न भये ॥ ६६ ॥ तब तौ सतानंदजोहै सो नमस्कार करिके बोलेकीं जो आजमैं भिक्षाकरलाऊं जो द्रव्यमिलै ताद्रव्यसो भगवानकी पूजाकरोगो ॥ ६७ ॥ यहनिश्चै अपने मनमै करकै भिक्षाके अर्थ नगरमें जात भयो वादिवस याको विनामांगे बहुत धनमिल्यो ॥ ६८ ॥ तब कौतुक देषिकै अपने घरको आवत

हूं ॥ ५६ ॥ अनायास द्रव्यमिलेतो वाद्रव्यसों हमारी पूजा करै हमभक्तिकर माने हैं जैसें गजकौ ग्राहनै पकरो ताको भक्तके वसहो संकटतै छुडावो ॥ ५७ ॥ अबयाकौ विधान सुनकरिकैं इच्छा करि पूजाकी सब सामग्री जैसै बरननकी तैसै पूजा करै ॥ ५८ ॥ गेहूको आटा सवासेर प्रमाण तामैं घृत शर्करादि मिलायवै और चंदन पुष्प धूप दीप नैवेद्य अनेक प्रकार करिकै रितुफलवे

विधानंश्रृणुविप्रेंद्रमनसाकामयन्फलं ॥ सम्यक्संभृतसंभारःपूजांकुर्याद्यथाविधि ॥ ५८ ॥ गोधूमचूर्णपादोर्ध्वसेटकादिप्रमाणकं ॥ दुग्धेनतावतायुक्तंघृतेनशर्करादिभिः ॥ ५९ ॥ गंधपुष्पादिभिश्चैववेदवादैर्मनोरमैः॥ धूपैर्दीपैर्भक्ष्यभोज्यैर्विभवेसतिविस्तरैः ॥ ६० ॥ मिष्टान्नपानतांबूलैःपूजयेद्भक्तितत्परः ॥ ब्राह्मणैःस्वजनैश्चैववेष्टितःश्रद्धयान्वितः ॥ ६१ ॥ त्वयासार्द्धममकथांश्रृणुयात्परमादरात् ॥ इतिहासंतथाराज्ञोवणिजश्चमनोरमं ॥ ६२ ॥ कथांतेप्रणमेद्भक्त्याप्रसादंविभजेत्ततः॥ लब्ध्वाप्रसादंभुंजीतमानयन्नविचारयन् ॥ ६३

दके शब्दनसहितपूजनकरे ॥ ६० ॥ अरुमिष्टान्न पान श्रद्धासहित भक्ति तै तत्पर होयकै पूजाको करै ॥ ६१ ॥ परंतु मेरीकथाको परम आदरसै श्रवन करै जैसे राजाके वैश्यके इतिहासन श्रवन करते हैं ॥ ६२ ॥ कथासुनिकर नमस्कारकरे तब प्रसादले यामैं मान भावकरै जोमिलै तामैं ताको भोग लगावै ॥ ६३ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

सत्यनारायणस्वामीकों नमस्कारहै जगतकेकर्ताहो विश्वके पोषणकर्ताहो शुद्ध सत्वहो करालहो कालहो आत्माहो मंगलमूर्तिहो तुमकोबार२ नमस्कारहै ॥ ५२॥ हमआज धन्यहै हमारो जन्म आज धन्य हैं कृतकृत्य भयो मनवाणिकै जानन हारहो तुम प्रत्यक्षहो॥ ५३ ॥ सो हम कहांतक वर्णन

नमःसत्यनारायणायास्यकर्त्रे नमःशुद्धसत्वायविश्वस्यभर्त्रे ॥ करालाय कालात्मकायास्यहंत्रेनमस्तेजगन्मंगलायात्ममूर्ते ॥ ५२ ॥ धन्योस्म्यद्य कृतार्थोस्मिभवोद्यसफलोमम ॥ वाङ्मनोगोचरोयस्त्वंममप्रत्यक्षमागतः ॥ ५३ ॥ दृष्टःकिंवर्णयाम्यद्यनजानेकस्यवाफलं ॥ क्रियाहीनस्यमंदस्यदेहोयंसफलीकृतः ॥ ५४॥ कांकिंचनोहंभगवन्‌कपूजातेरमापते ॥ विधिना केनकृपयातदाज्ञापयमांविभो ॥ ५५॥ हरिस्तमाहमधुरंसस्मितंविश्वमोहनं॥ पूजायांममविप्रेंद्रधनंनापेक्ष्यतेबहु ॥ ५६॥ अनायासेनलभ्येतश्रद्धयातेनमांयज ॥ ग्राहोगजोजामिलोवाभक्त्यैवोन्मुक्तसंकटाः॥ ५७ ॥ ॥

करैं नजानेको फलसे क्रियाहीन मंदभागी ताकी देहसो कठिनकरी॥ ५४॥ सो महाराज कौनकी पूजाकरैं और कहाविधानहै सो कृपाकरकैकहो ॥ ५५॥ तब भगवान कहतभये हेजन मीठी वाणीसे मेरी पूजाकरो मैं बहुत धनकी इच्छा नहीं करतांहूं विशेष करकै प्रीतिभाव सै प्रसन्न होता

पूजाकीसामग्री सबलायकरिकै जगतके कल्यानके अर्थ सत्यनारायणकी पूजाकरो और याको प्रगटकरो ॥ ४७ ॥ ऐसे कहतो भयो ब्राह्मण देषतेही भगवानके रूपको कैसे रूपहै मेघको सो आभासुंदरहै रूप चारभुजा तिनकी शंखचक्रगदापद्मलियेभये ॥ ४८ ॥ पीतांबरको धारण किये भये प्रेममें मगनहोके अति शोभयमानहैं नेत्र जिनके वनमालापहिरेहुए ॥ ४९ ॥ ऐसे भगवा

आहृत्यपूजासंभारान्हितायजगतोद्विज ॥ अर्चयंस्तमनुध्यायन्त्वमेतत्प्रकटीकुरु ॥ ४७ ॥ इतिब्रुवंतंविप्रोसौददर्शपुरुषोत्तमं ॥ जलदश्यामलंचारुचतुर्बाहुगदादिभिः ॥ ४८ ॥ पीतांबरंनवांभोजलोचनंस्मितशोभनं ॥ वनमालामधुकरचुंबितांघ्रिसरोरुहं ॥ ४९ ॥ निशाम्यपुलकांगोसौप्रेमपूर्णाश्रुलोचनः ॥ स्तुवन्गद्गदयावाचादंडवत्पतितोभुवि ॥ ५० ॥ शतानीकउवाच ॥ ॥ प्रणमामिजगन्नाथंजगत्कारणकारणम् ॥ अनाथनाथंशिवदंतापत्रयविमोचनं ॥ ५१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

नके वचन सुनके प्रसन्न होतभयो मगनहोके आखोंसैं आंसुडारनलग्यो गद्गदवाणीसो स्तुतिको करतो पृथ्वीमैं गिरत भयौ ॥ ५० ॥ हे जगतकेनाथ तुमकौ नमस्कारहै तुमजगत कारण करताहो अनाथके नायहो और वरदेनहारे हो हे नाथ तुम तीन प्रकारके जो तापहै तिनके आप नाशकरनहारेहो ॥ ५१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

सत्यनारायणकौभजिये ॥ ४२ ॥ कैसे है सत्यनारायण तीनप्रकारके दरिद्र शोक संताप तिनको नाशकरताहै और मोक्षके देनहारे हैं ऐसे जो सत्यनारायण तिनकी तुम शरणजावो ॥ ४३ ॥ ऐसे जब ब्राह्मणको समझायो भगवानने तब ऐसे करुणा करके ब्राह्मण फिर पूछत भयो कि सत्यना

ममोपदेशतोविप्रसत्यनारायणंभज ॥ ४२ ॥ दारिद्र्यशोकत्रिविधसंतापहरणंहरेः ॥ चरणंशरणंयाहिमोक्षदंमलमोचनं ॥ ४३ ॥ एवंसंबोधितोविप्रो हरिणाकरुणात्मना ॥ पुनःपप्रच्छविप्रोसौसत्यनारायणंविभुं ॥ ४४ ॥ श्रीसत्यनारायणउ० ॥ ॥ बहुरूपीसमुत्पन्नःसर्वव्यापीनिरंजनः ॥ इदानींविप्ररूपेणतवप्रत्यक्षमागतः ॥ ४५ ॥ दुःखेहंविनिमग्नानांतारणंशरणंहरेः ॥ कुशलाःशरणंयांतिनेतरेविषयात्मकाः ॥ ४६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

रायण कौनहै ॥ ४४ ॥ तब भगवान् बोले ब्राह्मणसे कि सत्यनारायणके अनेक रूपहैं सत्यके मिलापि हैं सर्व व्यापी है निरंजनहै सोई ब्राह्मणकोरूप धारणकरिके तुम्हारे सन्मुख आवतभये ॥ ४५ दुःखरूपी जो उदधिसमुद्र तामैं डूबे जो मनुष्य तिनके उद्धार करिवेको भगवानके चरणारविंद जो नौकारूप है तातें भगवानके चरणकी शरण तुमजावो जो भगवानकी शरणगये तिनकी कुशलहै और बिन भगवानकी शरणगये कुशल कैसी है ॥ ४६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ३७ ॥ सतानंदताकोनांमहै विष्णुकेव्रतमैंतत्परहै एकदिन भिक्षाकेनिमित्त पथिजोमार्ग तामै चलो जात भयो ॥ ३८ ॥ तबनीति करिकै युक्तवृद्ध ब्राह्मणकोरूप धरिकें भगवान् सन्मुख होत भये तब भगवान् वातै पूछत भये ॥ ३९ ॥ हे ब्राह्मण तुम कहां जाओगे कौन तुह्मारी वृत्तीहै ॥ ४०

शतानंदइतिख्यातोविष्णुव्रतपरायण: ॥ एकदापथिभिक्षार्थंगच्छतस्तस्यश्रीपतिः ॥ ३८ ॥ विनीतस्यातिशांतस्यसर्वभूवांछिगोचर: ॥ वृद्धब्राह्मणवेषेणपप्रच्छब्राह्मणंहरिः ॥ ३९ ॥ क्वयासीतिद्विजश्रेष्ठवृत्तिंकामेत्तकथ्यतां ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ भिक्षावृत्तिरहंसौम्यकलत्रपुत्रहेतवे ॥ याचितुंधनिनांद्वारिव्रजामियत्रकुत्रचित् ॥ ४० ॥ विष्णोःप्रार्थयमेदिनींपशुपतेः सीरंबलाद्वारणंप्रेतेशान्महिषस्तवास्तिवृषभःफालेत्रिशूलंकुरु ॥ सक्ताहंतवचान्नपाननयनेस्कंदोगवांरक्षणेभिक्षांचत्यजगार्हितांकुरुकृर्षिगौरीवचः पीतुवः ॥ ४१ ॥ भिक्षाव्रतंसदागर्ह्यंविशेषेणकलौयुगे ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

तब ब्राह्मण बोलतभयोकि महाराज भिक्षाकरिकै हमारी आजीवकाहे भिक्षा करिकै कुटुंबकी पालनाकेरैहैं और धनकी आशा करिकै राजाके द्वारपर जायेहै ॥ ४१ ॥ तब भगवान् ब्राह्मणते बोलत भये कहाके कलिमें विशेष करकें घरमैं करनोही उचितहै परंतु हेविप्र मेरे उपदेश करीकैं

या बंदनको अर्पणकरे अरुब्राह्मणनको दक्षिणादे करिकै कथाको श्रवणकरै ॥ ३२ ॥ तातैं अनंतर भैया बंधुसहित विप्रनको प्रसाददेकें आप भोजन करै ता पीछे गावनो बजावनो करै ॥ ३३ ॥ तब सब अपने घरको सिधारें और सत्यनारायणको स्मरण करते जांय ऐसे जो मनुष्य या व्रतको करैंगे तिनकी वांछाफल सिद्धिहोयगी ॥ ३४॥ विशेष करिकें कलियुगमें यह उपाय छो ये सोहै सो

ततश्चबंधुभिःसार्द्धविप्रादिभ्यःप्रदापयेत् ॥ सपादंभक्षयेद्भक्त्यानृत्यगीतादिकंचरेत् ॥ ३३ ॥ जनःस्वंस्वंगृहंगच्छेत्सत्यनारायणंस्मरन् ॥ एवंकृतेमनुष्याणांवांच्छासिद्धिर्भवेद्धुवं ॥ ३४ ॥ विशेषतःकलियुगेलघूपायेनभूतले ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिकृतंयेनपुराद्विज ॥ ३५ ॥ कृपयाब्राह्मणद्वाराप्रकटीकृतवान्स्वयम् ॥ इतिहासमिमंवक्ष्येसंवादंहरिविप्रयोः ॥ ३६ ॥ काशीपुरीतिविख्याताתत्रासीद्ब्राह्मणोवरः ॥ दीनोगृहाश्रमीनित्यंभिक्षुःपुत्रकलत्रवान् ॥ ३७॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

तुमसे कहोहै अब और कहे है जा करिकै पहले यहव्रत कियो गयो ताको इतिहास करतहैं॥ ३५ ॥ तब कृपाकरिके भगवाननें ब्राह्मणको रूप धरिकै प्रगट भये सो इतिहास ब्राह्मणसे भगवान् कहतहैं ॥ ३६ ॥ काशीपुरीमैं एक ब्राह्मणहै दीनकरिके गरीब गृहस्ती भिक्षाकर कुटुंबको पालन करैहो

और ताम्रप्रतिमाकी पंचामृतबनायस्नानकरावै फिरयुग्मवस्त्र तिनसौं आच्छादितकरै ॥ २७ ॥ त्रंबेके पात्रमैं विष्णुकी प्रतिमास्थापितकरै अरुस्वस्तिवाचनसहित वाकीप्राणप्रतिष्ठाकरै ॥ २८ ॥ अरुचंदन आदिसुगंधले करिकें ऋतुफल सुंदर धूपदीपनैवेद्य तांबूल पुष्पइत्यादिक करके पूजन करै ॥ २९

कारयेद्बुद्धिमानेनस्नापयेच्चयथाविधि ॥ पंचामृतंततोवस्त्रयुग्मेनपरिवेष्टितं ॥ २७ ॥ ताम्रमात्रेषुविन्यस्यस्थापयेत्प्रतिमांशुभां ॥ प्रतिष्ठांचप्रकुर्वीतस्वस्तिवाचनपूर्वकं ॥ २८ ॥ चंदनेनसुगंधेनऋतुकालोद्भवैःफलैः ॥ धूपदीपैश्चनैवेद्यैस्तांबूलैःपूजयेद्विभुं ॥ २९ ॥ ब्राह्मणैर्बांधवैश्चैवसहितोधर्मतत्परः ॥ नैवेद्यंभक्तितोदद्यात्सपादंभक्ष्यमुत्तमं ॥ ३० ॥ रंभाफलंघृतंक्षीरं गोधूमस्यचचूर्णकं ॥ अभावेशालिचूर्णंचशर्कराचगुडस्तथा ॥ ३१ ॥ सपादंसर्वंभक्ष्याणिचैकीकृत्यनिवेदयेत् ॥ विप्रायदक्षिणांदद्यात्कथांश्रुत्वाजनैःसह ॥ ३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

अरुब्राह्मणनकरिके सहित तत्पररहे अपनी भैया बंदनकौबुलायके भक्तिसहित नैवेद्य भोग लगावै ॥ ३० ॥ रंभाफल कहिये केला घृत दूध मिष्टान्न गेहुको आटा अथवा चावरको आटा तामैं शक्कर अथवा गुड मिलावै ॥ ३१ ॥ सपाद करिके सहित संपूर्ण जो भोगहै तांहि एकत्व करिकै भै

सत्यनारायण भगवान कौ वादिवस रात्रिके समय पूजन करै और तोरणादिबंधनवार बांधै और केलेकेखंभलगावै और पांचकलशस्थापितकरै और ध्वजासहित जलसौं भरिकै रत्न सहित सुपारी आदिसारी सामग्री धरै ॥ २२ ॥ फूलोंकी माला कलशको पहरावै सातधानाताकेऊपर कलशको

पंचभिःकलशैर्युक्तंध्वजादिकसमन्वितम् ॥ जलपूर्णंसरत्नंचपुगीफलसमन्वितं ॥ २२ ॥ भूषितंपुष्पमालाभिःसप्तधान्योपरिस्थितं ॥ आच्छादयेत्पट्टवस्त्रैर्नानावर्णविचक्षणैः ॥ चंदनेनसुगंधेनलेपयेद्गृहमंडपं ॥ शंखभेरीमृदंगांश्चवादयेद्बहुभिर्जनैः ॥ २४ ॥ नानामंगलचारैस्तु कर्तव्यंनिजसंजनैः ॥ संध्यायांनियमंकृत्वादंतधावनपूर्वकम् ॥ २५ ॥ प्रातरुत्थायमेधावान्स्नात्वावश्यकमाचरेत् ॥ तदनुप्रतिमामेकांसौवर्णस्यशुभाकृतिं ॥ २६ ॥

स्थापितकरै रेशमी वस्त्रसौं ताकोढके नानाप्रकारके वर्णता सोंचर्चै ॥ २३ ॥ ताके पास ग्रहनको मंडल बनावै ताको चंदन आदिलेके सुगंध तासोलेपनकरे और शंखभेरि मृदंग ताको बजावै ॥ २४ ॥ और नाना प्रकारके मंगल सहित ताको करैं और संध्याको दंतधावन आदिक करिव्रतकोनियम करैं ॥ २५ ॥ और प्रातसमय उठकरिके स्नानकरै ता उपरांत सुवर्णकी प्रतिमा बनाये सुंदर स्वरूप आभकांति होय जामें ॥ २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

कनमें दुर्लभहै तुह्मारेस्नेह करके अबहम प्रकाशकरैं हैं ॥ १७ ॥ सो कौंनसोव्रतहै सत्यनारायणको व्रत है ताके कियेतें धनधान्य और संपत्ति शीघ्रही प्राप्त होयहै ताके अनंतर जबमृत्यु होय तब मोक्ष को प्राप्त होयहै ताको सम्यग्विधान करके करनो योग्य है ॥ १८ ॥ तब भगवानके ऐसे बचन सु

सत्यनारायणस्यैकंव्रतंसम्यग्विधानतः ॥ कृत्वासद्यःसुखंभुक्त्वापरत्रमोक्षमाप्नुयात् ॥ १८ ॥ तच्छ्रुत्वाभगवद्वाक्यंनारदोमुनिरब्रवीत् ॥ किंफलंकिंविधानंचकृतंकेनैवतद्वद ॥ १९ ॥ तत्सर्वंविस्तराद्ब्रूहिकदाकार्यंव्रतंप्रभो ॥ ॥ २० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दुःखशोकादिशमनंधनधान्यप्रवर्द्धनं ॥ सौभाग्यसंततिकरंसर्वत्रविजयप्रदं ॥ यस्मिन्कस्मिन्दिनेमर्त्योभक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ सत्यनारायणंदेवंयजेच्चैवनिशामुखे ॥ तोरणादिचकर्तव्यंकदलीस्तंभमंडितम् ॥ २१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

नकै नारदजी बोले हे भगवान् या व्रतको कौनफलहै और कहाविधानहै कहा करिके कियो गयो आप सबविस्तार करिके कहो ॥ १९ ॥ कबकरें या व्रतको सो बिस्तार पूर्वक कहो ॥ २० ॥ तब भगवान् बोलतभये कैसोहै येव्रत दुःखशोककूंहरेहै और धनधान्यकोदेनहाराहै और सौभाग्यसंपत्ति कौ करेहै सर्वत्र विजयकूंदेहै ऐसो वह व्रतहै ताकूं जादिवसकरै तादिन भक्ति श्रद्धासहितकरै ॥ २१ ॥

तब श्रीभगवान् कहतभये हे नारदजी तुम काहेको आयेहो कहा तुह्मारी इच्छाहै सो संपूर्ण तुमक हो ॥ १३ ॥ तबनारदजीबोले हे भगवान् मृत्युलोकके मनुष्यहमने संपूर्ण क्लेशकरके युक्तदेखे और नानाप्रकारकीयोनिमैं उत्पन्नहोके पापकर्मसों पचरहेहैं ॥ १४ ॥ सोहे महाराज तिनमनुष्यके अर्थ

श्रीभगवानु० ॥ किमर्थमागतोसित्वंकिंतेमनसिवर्तते ॥ कथयस्वमहाभागतत्सर्वंकथयामिते ॥ १३ ॥ नारदउ० ॥ मृत्युलोकेजनास्सर्वेनानाक्लेशसमन्विताः ॥नानायोनिसमुत्पन्नाःपच्यंतेपापकर्मभिः॥१४॥ तत्कथंशमयेन्नाथलघूपायेनतद्वद ॥ श्रोतुमिच्छामितत्सर्वंकृपास्तियदितेमयि ॥ १५ ॥ श्रीभगवानु० ॥ साधुपृष्टंत्वयावत्सलोकानुग्रहकांक्षया ॥ यत्कृत्वामुच्यतेमोहात्तच्छृणुष्ववदामिमे ॥ १६ ॥ व्रतमस्तिमहत्पुण्यंस्वर्गेमर्त्येचदुर्लभं ॥ तवस्नेहान्मयावत्सप्रकाशःक्रियतेधुना ॥ १७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

छोटोसो उपाय तुमकहो मेरे नाथ ताके सुनवेकी इच्छाहै सो तुमकृपाकरिकै कहो ॥ १५ ॥ तब भगवान् बोले हे साधु तुमने अच्छाप्रश्नकिया संसारके कल्यानके हेतता करकै मोहतैं छूटजायहैं ताकोकहैहै सोसुनो ॥ १६ ॥ हे नारदजी एककृत्य है ताको बडोपुण्यहै सो स्वर्ग अरु मृत्यु इन लो

कारकी योनितिनमैंउत्पन्नहोयकैं अपनेकियेको भोगकरेहै ॥ ७ ॥ तामृत्युलोकमेलोगकोदुःखितदे
खकरकैंविचारतभये मनुष्यकेदुष दूरकरिवेको कौनसोउपायहै ऐसे विचार करतेविष्णुलोककोजा
तभये ॥ ८ ॥ तत्रकहियेतहांजायकरिकैदेषतभयेकैसेहैं श्रीभगवानशुक्लवर्णहै जिनको और चार भु
जा धारणकिये औ शंखचक्रगदापद्मलिये बनमालापहिरेहैं ॥ ९ ॥ ताविष्णु भगवानको ऐसोस्वरूपदे

केनोपायेनचैतेषांदुःखनाशोभवेत्ध्रुवं ॥ इतिसंचिंत्यमनसाविष्णुलोकंगत
स्तदा ॥ ८ ॥ तत्रनारायणंदेवंशुक्लवर्णंचतुर्भुजं ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमा
लाविभूषितं ॥ ९ ॥ दृष्वातुदेवदेवेशंस्तोतुंसमुपचक्रमे ॥ १० ॥ नारदउवाच ॥
नमोवाङ्मनसातीतरूपायानंतशक्तये ॥ आदिमध्यांतहीनायनिर्गुणाय
गुणात्मने ॥ ११ ॥ सर्वेषामादिभूतायभक्तानामार्तिनाशिने ॥ श्रुत्वास्तोत्रं
ततोविष्णुर्नारदंप्रत्यभाषत ॥ १२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

षकै नारदजीस्तुतिकरतभये ॥ १० ॥ हे भगवान् तुमकोहमारी नमस्कारहै कैसेहोतुमवाणीकेमनके
जानने वालेहो औ आनंद अनंतरूपहो और तुह्मारी अनंतशक्तीहैं आदिअंतके कारनहारहो निर्गुण
हो गुणकीआत्माहो संपूर्णजो प्राणी तिनको आदिभूतहो सबकेकारनहो भक्तनकोदुःखनाशकरताहो
ऐसे नारदजीकीस्तुतिसुनकरकै श्रीभगवान् नारदजीसेकहतभये ॥ १२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥